B.A- Semester - II (SOCIAL PSYCHOLOGY)

Q:— समाजीकरण (Socialization) की परिभाषा दें तथा इसकी प्रमुख प्रक्रियाओं का वर्णन करें।—

Answer:— सामाजिकता मनुष्य का एक गुण है, जो जन्मजात नहीं, बल्कि अर्जित होता है। जन्म के समय बच्चों में सामाजिकता के कुछ भी लक्षण वर्तमान नहीं होते हैं। समाज में रहते-रहते उसमें सामाजिकता के गुणों का विकास होता है जिसे समाजीकरण के नाम से जानते हैं। बच्चा जिस समाज में रहता है, वहाँ वह परिवार के वयस्क सदस्यों से सामाजिक मूल्यों, प्रतिमानों, मनोवृत्तियों आदि को सीखता है। प्रत्येक संस्कृति, समाज यहाँ तक कि एक ही समाज के विभिन्न समूहों में बच्चे को पालने की शैली और मनोवृत्तियों में भेद होता है। इस भेद के फलस्वरूप विभिन्न संस्कृति और समाज समूहों के बच्चों में अलग-अलग ढंग का व्यवहार प्रतिरूप अथवा व्यक्तित्व का विकास होने लगता है। यही इनके समाजीकरण का आधार बनता है।

समाजीकरण के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इसे परिभाषित किया है। अधिकांश मनोवैज्ञानिकों ने इस बात पर बल दिया है कि किस प्रकार कुछ सीमित जन्मजात क्षमताएँ लेकर जन्म लेनेवाला बच्चा क्रमशः अपने सक्रिय सामाजिक समूह का एक सदस्य बन जाता है। न्यूकॉम्ब (New comb) ने समाजीकरण को परिभाषित करते हुए कहा है: "समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज बच्चे को अपने ढाँचे में ढाल लेता है।"

socialization

इस प्रकार, उपर्युक्त परिभाषा में व्यवहार का रूप निर्धारण में संस्कृति के महत्व पर विशेष बल दिया गया है और कहा गया है कि समाजीकरण एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा नवजात शिशु अपने समूह के सांस्कृतिक ढाँचे में ढल जाता है।

किम्बल यंग (Kimbal Young) के अनुसार "समाजीकरण से हमलोगों का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा बच्चा अनेक समाज या समूह का क्रियाशील एवं सहयोगी सदस्य बनना सीख जाता है। इन्हीं से मिलता-जुलता परिभाषा एलकीन (Alkin) की भी है। इनके शब्दों में, "बच्चों में केवल आवश्यकताएँ ही नहीं होती जिनको वह संतुष्टि चाहता है; बल्कि वह अपने चारों ओर की दुनिया के प्रतिरूप, प्रतीक प्रत्याशाएँ तथा भावनाएँ सीखता है।" नवजात शिशु निःसहाय होने के ~~बावजू~~ बावजूद निश्चित रूप से सक्रिय होता है। बच्चा अपने समाजीकरण में बहुत सहयोग देता है और समाज द्वारा लगाये गये प्रतिबन्धों को स्वीकार करके सामाजिक व्यवस्था को पुष्ट करता है। प्रसिद्ध विद्वान बन्दुरा ने लिखा है; "जिस समाज में व्यक्तित्व रहता है उसमें प्रभावपूर्ण ढंग से कार्य करने के लिए आवश्यक गुणों को विकसित करने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहते हैं।"

समाजीकरण की सबसे उपर्युक्त परिभाषा जिगलर ने 1978 ई० में दिया है। इनके अनुसार "समाजीकरण एक व्यापक शब्द है

जिसके अन्तर्गत वे सभी प्रक्रियाएँ आती हैं जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे के साथ आदान-प्रदान करके समाज के अनुरूप अपने व्यवहार एवं अनुभव के विशिष्ट प्रतिरूप विकसित करती है।"

इस प्रकार, जिंसबर्ग की परिभाषा से समाजीकरण का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है।

<u>समाजीकरण की प्रक्रिया</u> :— समाजीकरण की प्रक्रिया अर्जित होती है। जन्म के बाद उम्र वृद्धि के साथ-साथ बच्चा सामाजिक सम्पर्क में रहने के साथ-साथ समाज के रीति-रिवाज, नियम और आदर्श को अपने अनुभवों के आधार पर सीखता है और जन्म से लेकर मृत्यु तक सीखता ही रहता है। वह गलत व्यवहारों को छोड़कर समाज के उचित व्यवहारों को सीखता है। जिन विधियों द्वारा समाजीकरण होता है उन्हें समाजीकरण की प्रक्रिया कहते हैं।

समाजीकरण की प्रक्रिया को दो भागों में बाटा जा सकता है। वे इस प्रकार हैं।

(1) समाजीकरण की प्राथमिक प्रक्रिया.

(2) समाजीकरण की गौण प्रक्रिया.

(1) <u>समाजीकरण की प्राथमिक प्रक्रिया</u> :— समाजीकरण की प्राथमिक प्रक्रियाओं के अन्तर्गत निम्नलिखित तत्व होते हैं।

(क) <u>सुझाव</u> :— किसी व्यक्ति तथा समाज के आदर्शों और विचारों को चेतन या अचेतन रूप से अनुकरण करना ही सुझाव है। बोगार्डस ने कहा है कि " सुझाव विशिष्ट उद्दीपनों के प्रति की गई असमीक्षात्मक अनुक्रियाओं की एक प्रक्रिया है।" दूसरे शब्दों में, बिना तर्क-वितर्क के समाज के आदर्श, प्रथा, रीति-रिवाज, धर्म और नैतिक मूल्यों को अपना लेना ही सुझाव है। यह समाज के निर्माण और सामाजिक परम्पराओं के सुधार में बहुत ही उपयोगी है। यह व्यक्ति के विचार, मनोवृत्ति, रहन-सहन के ढंग, वेशभूषा आदि में सहायक होता है। Allport के अनुसार आत्म संकल्प के पूर्ण अभाव में किसी विश्वास और कार्य करने की प्रक्रिया को सुझाव कहते हैं। यंग ने सुझाव के दो प्रकारों की चर्चा की है।— प्रत्यक्ष सुझाव तथा अप्रत्यक्ष सुझाव। प्रत्यक्ष सुझाव में प्रत्यक्ष रूप से तथा अप्रत्यक्ष सुझाव में अप्रत्यक्ष रूप से किसी वस्तु के बारे में कहा जाता है।

(ख) <u>अनुकरण</u> :— अनुकरण का तात्पर्य होता है व्यवहारों का नकल करना। बच्चा अपने माता-पिता का फैशन, संस्कृति और व्यवहार का अनुकरण करता है। अनुकरण के माध्यम से शिक्षण, बातचीत, रहन-सहन, लोकाचार, सामाजिक मूल्य, आदर्श, धार्मिक बातें इत्यादि प्रभावित होती हैं। अनुकरण भी दो प्रकार का होता है:— प्राथमिक अनुकरण और सामान्यीकृत अनुकरण.

प्राथमिक अनुकरण अवस्था का सूचक कहा जाता है। जैसे :- दूसरों के मुस्कुराने पर मुस्कुराना। सामान्यीकृत अनुकरण में क्रियापूर्ण और चेतनस्वरूप का अनुकरण आता है। इसके पीछे प्रेरणा का हाथ होता है। पिता अपने बच्चों को उनके कार्य का अनुकरण करते हुए देखकर उसके कार्यों का अनुकरण करते हैं।

(ग) **सहानुभूति** :— समाजीकरण में सहानुभूति का भी कम हाथ नहीं होता। हम किसी-न-किसी व्यक्ति के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं। और दूसरों से सहानुभूति प्राप्त करते हैं। Woodworth के अनुसार सहानुभूति का अर्थ दूसरों के साथ सुख-दुःख का अनुभव करना जितना ही दूसरे व्यक्ति से भावनात्मक रूप से निकट रहता है; उसके प्रति सहानुभूति की मात्रा उतनी ही अधिक पायी जाती है। जैसे - किसी की मृत्यु होने पर शोक प्रकट करते हैं; विवाह के समय एक दूसरे से हँस-हँसकर मिलते-जुलते हैं। सहानुभूति से बच्चों में संतोष का भाव उत्पन्न होता है।

(2) **समाजीकरण की गौण प्रक्रियाएँ** :— बच्चे जन्म के बाद वातावरण के सम्पर्क में आते हैं और उनसे प्राप्त अनुभवों के द्वारा समाज के विभिन्न आदर्शों, नियमों आदि को सीखते हैं। इसे ही गौण प्रक्रिया कहते हैं।:- जैसे :-

(क) **बच्चों का पालन-पोषण** :— बच्चे पालन-पोषण के द्वारा ही समाज के विभिन्न आदर्शों को सीखते हैं। फ्रायड ने अपने अध्ययनों के आधार पर बतलाया है कि बच्चों के जीवन का प्रथम वर्ष बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है। उसका प्रभाव पूरे जीवन पर पड़ता है। बचपन में समय पर खिलाने, स्नान कराने, स्कूल पढ़ाने आदि का प्रशिक्षण देने पर वयस्क होने पर भी उसी नियम का पालन करते रहता है। इसी प्रकार बच्चों की प्रेम तथा उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति होने से उसका ठीक ढंग से विकास होता है।

(ख) **भाषा** :— भाषा के माध्यम से व्यक्ति अपनी अनुभूतियों तथा इच्छाओं को व्यक्त करता है तथा दूसरों के भावों एवं अनुभूतियों को समझता और उसी के अनुसार व्यवहार करता है। भाषा के द्वारा ही व्यक्ति को समाज में आदर्श, नियम, प्रथा आदि की जानकारी होती है। समाजीकरण में बहुत अधिक सहायक होता है।

होता है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि समाज में उसकी मान-मर्यादा सबसे अधिक हो तथा सभी लोग उसकी प्रशंसा करें।
इन गानों से प्रेरित होकर बच्चा समाज के मानदण्डों, रीति-रिवाजों आदि को सीखता है। इन चीजों को सीखने में व्यक्ति की प्रेरणा काम करती है।

(ख) प्रशंसा एवं निन्दा :— बच्चों में यह सामान्य प्रवृत्ति होती है कि वे प्रशंसनीय कार्य को करना चाहते हैं और निन्दनीय कार्य को छोड़ देते हैं। इस प्रकार का परिणाम Thorndike ने अपने प्रयोगों में पाया। समानीकरण भी एक प्रकार की शिक्षण प्रक्रिया है जो प्रशंसा, निन्दा तथा दण्ड पुरस्कार आदि से प्रभावित होता है।

(ग) प्रचार :— मनोवैज्ञानिकों का ऐसा विचार है कि प्रचार के बिना समानीकरण की प्रक्रिया कभी भी पूर्ण नहीं हो सकती। इसीलिए, आज दुनिया भर में प्रचार के साधनों का विकास हुआ है। आज अखबार, पत्रिका, रेडियो, टेलीविजन आदि के द्वारा प्रचार किया जाता है। इन साधनों के द्वारा समाज के आदर्शों, नियमों, रीति-रीवाजों प्रथाओं के मानदण्डों को लोगों तक पहुँचाया जाता है।

(घ) सहयोग :— बच्चे चार-पाँच वर्ष की उम्र में सहयोग देना सीखते हैं। उम्र वृद्धि के साथ-साथ, माता-पिता, परिवार, पड़ोसी, मित्र और शिक्षक के गुणों को सीखते हैं।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि समानीकरण की अनेक प्रक्रियाएँ हैं। इसके अतिरिक्त कुछ मनोरचनाओं का भी सहयोग समानीकरण में होता है। जैसे :— दमन, युक्तिकरण, उदात्तीकरण आदि। इस बात का समर्थन प्रसिद्ध मनोविश्लेषक फ्रायड (Freud) ने किया है।